

भांतवार वंय सुजनी कसीदाकी गरमी होइ तो बाहर पौडें शीतलता-
य होय तो सिंहासनको साज भांतवार चढे शय्याके साज शीतकालके
दूजके पीरे छपाके वस्त्र श्रीमस्तक पर इच्छ होइ सो का टिपरा
जोडी खुलती.

चैत्र वरी में पहली मंडली गुलाबकी होइ ता दिन गुलाबी वस्त्र हरी
जोडी श्रीमस्तक पे गोल पाग हलकी शृंगार वा मुकुट हारकी धरे
शृंगार भारी होइ. स्त्रियाकी सामग्री मंडलीमें धरे रत्न. श्री-
मदन मोहनजीके पाये उत्सव वस्त्र केशरी कुलह केशरी चंद्रिका सादा जोड आभरण
माणिक्य के फूल मंडली खेदि। चैत्र सुद ६॥ यां तीनों होंग.)

कुं श्रीजगन्नाथजी महाराजको उत्सव वस्त्र केशरी भांत वार कुलह
धरे जोड सादा जोडी लाल वा हीराकी शृंगार भारी तुवरकी दार
राजभोगमें हांडी मलडा.

॥ चैत्र सुद ८ ॥

कुं कसूमल वस्त्र पाग गोल वा छल्लेदार कलंगी लूमकी धरे
वा सादा चंद्रिका जोडी सुनहराकी.

॥ चैत्र सुद ९ ॥

श्रीराम नौमी को उत्सव - नित्यके नेगमें और मण्डो आरोगे. आरती
थारीकी होइ अभ्यंग होय वस्त्र केशरी डेरि याके. जन्माष्टमीकी
कुलह तापे केशरी वस्त्र चढे. रामनौमी कुं श्रीमहाप्रभुजीके उत्सव
चंद्रिका को जोड सादा जोडी लाल प्राचीन कमल पुत्र होइ गादी हारा
को शृंगार दूसरे उत्सव व. गोपी वल्लभमें आरखो पाटिया मीगे
शाक उत्सवको संधाना. राजभोगमें छडी पल दार तीन कूज कच-
रियानकी थारी मिरच फल मीगे शाक भुजेना करके तथा ऋतु
अनुसार वडीके शाक दोई हांडी नही दूधको कयोरा नित्यको
आरोगे. अन सुखजमें शाक भुजेना थारीमें आवे रायता कयेरमें
गोपाल वल्लभमें मेवाये उत्सवको संधाना खीर दूनी वजाकी छ-
छकी चपलिया - पल नामें बदाम मिश्रीकी डेली से. उत्थापनमें
मेव चालनी सक वरहकी. राजभोग सरके पडाये कंकुको अष्टदल

श्रीगुरुदेवकी कृपासे
सुखपूर्वक

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 3

www.vallabhacharya-agrahar.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushchimargya Research Portal)

मांउकें दंडवत करकें श्रीबालकृष्णजीकें पधरायकें झालर घंय शंख-
नाद होइ तिलक अक्षत तुलसी चरणारविन्दमें पंचामृतमें शंखमें
समर्थे प्राणायाम करकें संकल्प ॐ विष्णु विष्णु ३ रित्यादि उतरायण
वसंत ऋतु शुभ तिथौ शुभ नक्षत्र शुभ योग शुभ करण एवं गुण
विशेषण विशिष्टयां शुभ तिथौ मम मयादि पुरुषोत्तमस्य प्रादुर्भावो
त्सवं कर्तुं तदनुत्वेन पंचामृतस्नानमहं कारयिष्ये पंचामृतस्नान
वामन द्वादशी वत् रामनौमीकें श्रीगुरुजीकें तिलक होइ तापीछें
श्रीबालकृष्णजीकें तिलक होय टेरा खेचें भोग ओवै दही भात सं-
क्षिप्त भई होय तो घोट्यो सुतुवा आरोगे दही भातके डगरामें नि-
त्यके संधानाकी कलेरी रामनौमीसुं दही भातमें आदा बंद जन्मा-
ष्टमी तांडी बूंदी शकर पाराके ऐकरा उत्सवको संधाना सीतल भोग
मीये शाक कैरीको विलसाख दुधकी हांडी कदली फलादिक
सैंधो लोन मिरच बुरा चालनी सुपतरहकी फलारको सब आरोगे
तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ झारी श्रीजमुनाजलकी समय होइ
भोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीड २ धरें सिल्लुकी मंडली गाय्हा-
पै सुजनी सिल्लुकी बाहर पोटें सांडकें पिछवाइ रामचरित्रकी
तकिया गाईपै गुण कालके उत्सवनमें खोली श्वेत रहे गादीवस्त्र
विछे वेत्र चौपड जडाऊ गेंद चौगान सेनेके आरसी बडी देखे
राजभोग आरती होइ आजसुं पांच मात्याको आघोजोड शुद्ध

॥ चैत्र सुद १० ॥

कूं शृंगार येही छडियलदार पकौजीकी तथा डुवकीकी बढी
आरोगे गोपालवल्लभमें बूंदीके लड्डुवा आरोगे पापड कचरिया
तिलवडी देवरी मिरच फल आरोगे

॥ चैत्र सुद ११ ॥

सुं मिरचफल बंद राजभोगमें गोपीवल्लभमें नित्य नहीं उत्सवके
गिन आरोगे एकादशीसुं शयनमें दोइ पापड

॥ वैश्व सुद १२ ॥

झादरीसुं कंदके शाक भुजेना बंद एका दशीकुं केसरी वस्त्र वा
कसूमल वस्त्र टोपी कुंजाकी वा झालरकी जोडी खुलती सब ए-
कादशी कुं कंदके शाक भुजेना आरोगे श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकी
बधाई बैठे

॥ वैश्व सुद १५ ॥

मेष संक्रांत बैठे ता दिन शृंगारको नियम नहीं संक्रांति सवे-
रकुं बैठे तो गोपाल वल्लभमें सुतुवाके लडुवा चोरयो सुतुवा
आगेकी डवरीयानमें सांझकुं संक्रांति बैठे तो दूसरे दिन गो-
पाल वल्लभमें चोरयो सुतुवा आरोगे संक्रांतिको भोग जा समय
संक्रांति बैठे ता समय आवे सुतुवाके लडुवा मीये शाक चालनी
सब तरहकी तुलसी समर्पे धूप दीप होइ अनोसरमें संक्रांतिको
भोग नहीं आवे श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकुं मेष संक्रांति बैठती
होइ तो दूसरे दिन मंगल भोगमें सुतुवा धरने उत्सवकुं नहीं

॥ वैशाख वद १ ॥

वैशाख वद एकमसुं छट ताई एक दिन श्रीमहाप्रभुजीके उत्स-
वको शृंगार होय

॥ वैशाख वद ११ ॥

श्रीमहाप्रभुजीको उत्सव - वस्त्र केसरी मलमलके कुलह केसरी
जोडी लाल कमलपत्र होइ शृंगार दुहरो दूसरे उत्सववत् चूसनी
सोनेकी मोतीकी धरे अरोगवेको मंजान श्रीगिरिधरजीके उत्सव-
वत् चार भाव नहीं दही भाव शिरवरण मिश्रीको पना अधकीमें
आरोगे

अभ्यंग उवटना सहित श्रीगुरुजीकुं होइ श्रीमहाप्रभुजीकुं
अभ्यंग उवटना सहित होइ सोचो समर्पे आभरण गुंजा पहरे
राज भोगके समय न्यारो भोग आवे तिलकको क्रम श्रीगिरिधरजी
के उत्सववत् श्रीगुसांईजीके उत्सवकुं श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकुं
नोछाकर होय पटका नहीं श्रीगिरिधरजीके उत्सवकुं पटका नोछाकर

होइ चंदुवा श्वेत कसीदाके पाट बौकीकी खोली कसीदाकी श्वेत पिछ
वाई सिंहासन केशरी सिंहासनको सब साज जन्माष्टमी वत् जडाऊ
लंबी गादी लाकियानपै श्वेत भांतवार वस्त्र मखमल दाके जेवम देख
तो राखे शय्या मंदिरमें हिजेरा खाटकी सांकल चढे चुनके दिवलाकी
आरती मोतीकी थारीकी मुढाके ढकना कसीदाके

www.vallabhacharya-agrahar.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushchimargiya Research Portal)

द्वादशीके शृंगार एकादशीको छडि यलहार डुक्कीकी कूदी पाप
उ कंदके साक भुजेना गोपालवल्लभमें बुंदीके लडुवा आरोगे साज
कुं चोकमें चंदनके बंगलामें विराजे भोग संध्या शयन बंगलाहीमें
होय.

॥ वैशाख सुद ३ ॥

अक्षय तृतीयाके दिन बडो बालभोग सनुवाको आरोगे आरती
मोतीकी थारीकी रूपके दिवलाकी अभ्यंग होय वस्त्र श्वेत केशरी
की वेल कोरमें छ गोलकमल केशरके ४ कमल खूटपै २ बीचमें
ऐसी ओदनी ओदें वागा अक्षय तृतीयासुं बंद आश्वन वही मावस
तांई श्रीजन्माष्टमी तथा नौमी दसमीके वागा पहरे राधा अष्टमी
तथा नौमीकुं वागा पहरे आश्वन सुद १ कुं वागा पहरे अक्षय-
तृतीयासुं ४ वातीकी आरती होय जन्माष्टमीसुं आरतीके २ खंड
पूरे आश्वन सुद १सुं आरतीके ३ खंड पूरे चैत्र सुद १सुं
आरतीके खंड २ अक्षय तृतीयासुं १ खंड पूरे केशरकी
कोरकी ओदनी कागदके चित्रकी श्वेत कुलह तीन चंद्रिकाको जो-
उ कुलहपै आभरण मोतीके ताइत त्रिवल लड अलकावली गोरी
पै फूल नहीं तीन परखडी कलंगी तुरी मकराकृत कुंडल मोती
के श्रीकंठमें वही धुगधुगी धरे हत सांकला मुहा श्रीहस्तमें
फूल नहीं धुगधुगी धरे कटिपेच मोड़ी मोतीकी पोरना बडे गादी-
पै शृंगार मध्य तांई हनुमाल मोतीके आरसी बडी देखे शय्यापै
बंग चिकनो चढे श्वेत मुजनी मुढाके ढकना श्वेत मुढाके वस्त्र
पलटने रंगीननिकासने श्वेत धरने रूपहरी किनारोके चुनहरी

किनारीके सारा भांतवार नये जोड उत्सवनके रहे. पेडा श्वेत पिछ-
 वाई डोरेयाकी श्वेत पंखा चंदुका पेडा पंखा चंदेके श्वेत करवा
 कुंजा करवडी अरगजाकी करनी उत्थापनमें चनाबी दार मिश्रीको बना
 गोपीवल्लभमें आरवा पाटिया मोले शोक उत्सवको संधाना केरीको
 विलसार गोपीवल्लभमें राजभोगमें नित्य शुरु गुलाबको सीरा बंद
 चौथसु राजभोगमें छडीयलहार पकाडीको कडी पापडको नग पुरो
 कचारेया (चित्तवडी देवति) तीन बूडा बडाको छाछ नही मीये शाक उ-
 त्सवको संधाना गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुवा खीर डेडी हांडी नहीं
 नित्यके दूधको क्येरा आरोगे
 पलनामें मिश्रीको डेली मदान सेव
 चौकीपर गुलाबजलकी शीशी अरगजा करवा करवडी पंखा नये त्रि-
 घोडीपै अधिवासनकी त्यारी राजभोग सरे श्रीगुरुजी सिंहासन
 पै विराजे माला सब स्वरूपनकुं पहारके श्रीजमनाजलकी झारी १
 श्री गुरुजीकी भरे तिवारीमें उत्तरमुख बैठके अधिवासन करे
 प्राणायाम संकल्प करे विष्णु विष्णु देवता उत्तरयणे वसंत ऋतु
 वैशाखमासे शुक्लपक्ष अक्षय्य तृतीयायां शुभकारे शुभनक्षत्रे शुभ-
 योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषण विशिष्टयां शुभ तिथी भगवत् श्री-
 पुरुषोत्तमस्य चंदनोत्सवं कर्तुं तदङ्गत्वेन चंदनाधिवासनमहं करिष्ये
 कर्तुं अक्षत छेडके गड्डीकी क्येरी भोग धरे तुलसी शंखोदक धूप-
 दीप ४ वातीकी आरती पंखा चंदन निजमंदिरमें धरे एक करवडी सिंहा-
 सनपै करवा करवडी शय्या मंदिरमें धरे दर्शन खुले कीर्तन होष
 दंडवत करके आलर चंदा शंखनाद अरगजाकी गोली २ धराके शहर-
 यमें दोइ श्रीहस्तमें २ चरणारविन्दमें तुलसीदल समर्प छोटे गुरु-
 रजीकुं शालिग्रामजीकुं श्रीमहाप्रभुजीकुं अरगजाकी गोली समर्प हाथ
 धोवके पंखा करे टोरा खच भोग उत्सवको आवे दही भात सधाना
 की क्येरी दोरयो सवुवा पना मिश्रीको पना खांडको बीजके लडुवा
 उत्सवको संधाना दूधकी हांडी मीये शाक केरीको विलसार क-

दली फलादिक लोन मिरच कुरा चालनी सब तरहकी श्रीजमुनाजल
की झारी पहले भरी होइ सो श्रीवकुरजीके वाम ओर धरे।
तुलसी राखोदक धूप दीप समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र
वैद्य २ धातें पाट चौकी लगावें मोतीको वक्र चोपड वक्र वरनी झा-
री सब सीसी रखेको मेंद चौगार रूपेरे राज भोग आती होय माल
बड़ी होय चरणारविन्दके चन्दनकुं गुलाब जलसुं भिजोय देनो श्रीम-
हा प्रभुजीको चन्दन वडो कर लेनो अनोसर होय खसके परब टैरावटी
अक्षय तृतीयासुं शुरू रथयात्रा ताई गरमी होय तो अषाढी ताई
उत्थापनके समय श्रीवकुरजीके चरणारविन्दकुं गुलाब जलसुं भि-
जोवने। उत्थापन भोगमें मिश्रीको पना चनाकी दार भीजी तामें अजमान
पधरावे तीजकुं चौचकुं मंगकी दार पंचमीकुं आवे मृगकी अकुरीता-
के ऊपर खोपराकी जलेकी या प्रकार ओसरासुं नित्य रथयात्रा ताई
आरोगें स्नानयात्राकुं दार नहीं छेके मृग आरोगें रथयात्रासुं छेके
मृग चनाकी दार मंगकी दार एक ओसराकुं छेके आरोगें एक ओस-
राकुं भोजे आरोगें जन्माष्टमी ताई करवा करवडी पनादार अरगजा-
की वरनी जन्माष्टमी ताई अक्षयतृतीयासुं श्वेत करवडी कुंजा रथ-
यात्रासुं लाल करवडी कुंजा जन्माष्टमी ताई गरमी पहले बहुत आइ
जाय तो संवत्सरसुं बाहर पौदे रामनेमीसुं हिडोरा खाट चढे श्रीमहा
प्रभुजीके उत्सवसुं उत्थापनमें पना आरोगें वैशाख दोइ होइ तो
करवा करवडी शुरू होय अरगजाकी सुगंध चंदन मलियागिर के-
सर गुलाबजल अंतरके वडाको अगर अंकर चौवा गुलाबको अंतर
कस्तूरी वरास फुलेल आजसुं माला १० को आतो जोइ शुरू सो
अषाढी पूनम ताई

॥ वैशाख सुद ४ ॥

चौचकुं शृंगार अक्षयतृतीयाके कुलह पर पान अक्षयतीकी वैसरको
तुरी होराको

॥ वैशाख सुद ५ ॥

आजसुं छिरकाव शुरू राया गुलाबजलसुं छिडके वैशाख सुद ६
कुं श्रीगिरिधारी रायजीके लालजीको उत्सव करवा करवडी होराको

ओठनी बाहरकी खिडकीकी भाग हीराकी जोड़ी एक टेकड़ी श्रीकंठ-
में कंठी दुगदुगी निवल् हीराके कर्णफूल २ हस्तपूल २ हीराकी
अलकावली सीसपूल सिरपेच हीराके कलंगी धूमकी गारीपै ७
माला शंखार हीराके आंगोवनेको अमर श्रीपिंडलरायजीके अमरवकु
राजभोगमें सिरकातभास आंगोने जलको होइ फुहारा राख आ-
जसु राजभोग आवती विरियां तलसी समेपे पीछे ओठनी बड़ी
करनी सो बोडी आंगोने पीछे उदाय देनी जलको होइ फुहारा
शुरू सदासीसुं और चौदससुं जलको परातने खिलेनी रणयात्राके
पहले दिन ताई राजभोगमें आरती भुये पीछे आरसी देखे माला
बड़ी होइ ओठनी बड़ी करे सदासीसुं अषाढी ताई हिबेल विरा-
जे ता दिनसुं नहीं

॥ वैशाख सुद १४ ॥

श्री नृसिंहजीको उत्सव आखे दिनमें घेर मण्डौ आरती थारीकी
खपेके दीपलाकी अभंग होइ करन केशरी मलमलके जोडी मोतीकी
फूलह केशरी रुपहरी चिलकी पान तुरी वीका गोंयेको पूल हीराके
आभरण मोतीके तीन चट्टिकाको जोड हास कुडल श्रीहस्तमें फूल
हीराके श्रीकंठमें चौकी मोतीकी तापे वधनखा छोये पहरे गारी
पै हार मोतीको एक हार हीराके हीराकी दुगदुगीकी माला उत्सव
हार जुहीको कलीको चंपकलीको मोथीको नियम नहीं धरे क-
न धरे आरसी बड़ी देखे गोपीवल्लभमें आखे पाटिया मीगे
शाक उत्सवको संधाना पलनामें उत्सव प्रमाण उत्थापनमें उत्सव
प्रमाण राजभोगमें मीये शाक क्येरीनेमें आके घोखो सनुवा
आगेकी डवरियामें छडीयलदार पकोडीकी कदी पापड बज्जेराकर
गोपाल वल्लभमें सनुवाके लडुवा उत्सवको संधाना खीरडेवी
हांडी नही नित्यके वडके संधान आंगोने अन्नभारजीके शाक
होय द्वादशीके संध्या आरती पीछे शंकर राखो आपे
शायनभोग सरे चौक्रमें चौकीपै विराजे आचमन मुखवरन होय
माला श्रीगुरुजी पहरे एक झारी १ करवडी श्रीजमुनाजलकी

वैशाख सुदी १३ श्रीमहा प्रभुजीकी पादकाजीको पाट उत्सव
 वरन केसरी मलमलके किनारीदार ओढनी झालर किनारीकी बूले
 केसरी बिजकी आभरण हीराके नूपुर हीराके कटिपेच हीराके
 पोकी बाजुबंद जोल टिबडा पावैया के गोपीपेन सिरपेच के गिडा-
 ने हीराके फूल बंडल मकरानु हीराके पाज हीराके श्रीमहा फूल
 हीराके कलहकी निबल अलकावली हीराकी फोंदना छोट सिं-
 गार मध्यको गादीके ऊपर दोष त. ३ हार हीराके और आभ-
 रण मोतीके तीन चंद्रकाको जोड वेणु वेन मोतीके श्रीमहा प्रभु-
 जी आभरण गुंजा पहरे. श्रीमहा प्रभुजीकी पलंगडीकूं पोस वि-
 छे सईको सपेद. राज भोगमें त. गोपीवल्लभमें छडवाल दाल
 पकोडीकी कर्मे मीठे स्याक पापड वडी तिलवरी देवरी त. व-
 जीको स्याक पावैया आधो सेव से. १। बूरो सेर १॥—
 ची १— सुगंधी तो. ॥ इलाइकी त. गोपालवल्लभमें
 रसकी बूंदीके लडुवा वेसन से. ॥ ची से. ॥ बूरो से. १॥
 त. आंवाको रस यामें पडे सो कस्तूरीकी सुगंध वाल २
 त. छाछ वाजकी चमपिया १ ताकी दाल गंदीकी पाव. १
 ची २— त. दूध घरमेसूं हांडी १ रतल ३ दूधकी ताकी
 बूरो तो. २० सुगंधी तो. ॥ इ. त. मलराको दूध रतल ४॥
 बूरो पाव. ॥ २— केसर तोला. ॥ सुगंध तो. ॥ इला. त. रु. १
 की सामग्री दूध घरकी त. ओर सब नितनेग प्रमाणे जो सामग्री
 बालभोगमें न भई होइ तो त. राजभोगकी आरती मोतीकी थारीकी
 साज त. पंखा केसरी चोपड मोतीकी ताको पट अर्गजी तोर्ण
 वंदन बार देहरी त. सांझको वैष्णवनको मनोरथ होइ तो फूल
 मंडली होइ त. वैष्णवनको मनोरथ न होइ तो हू फूल मंडली
 आवश्यक होइ त. आरसी वडी

भरके धरे वरनी सीसी पीडा नित्यवत् दरसन खुले स्नानके पड़ा-
 पै कंकु को अष्टदल करके दंडकत करें झालर घंटा शंखनाद श्री
 नृसिंहजी शालिग्रामजीके पड़ाणे पधारवे तिलक अक्षत तुलसी
 श्रीशालिग्रामजीके ऊपर तथा पंचामृतमें समर्पे प्राणायाम करके
 सकल्य करे ॐ विष्णु विष्णु विष्णु रित्यादि उत्तमायणे वसन्त-
 ऋतौ वैशाख मासे बुकु पक्ष चतुर्दश्या तिथी शनिवार शुभन-
 क्षत्रे शुभयोग शुभकरणे एक गुणविशेषण विशिष्टया शुभतिथौ
 भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य नृसिंहावतार प्रादुर्भावेत्सर्वं कर्तुं तद-
 ङ्गत्वेन पञ्चामृतस्नानमहं कारयिष्ये पंचामृत श्रीवामनजीवत्
 श्रीशालिग्रामजीके गारीके पास जेवनी ओर पधारवे श्रीशालि-
 ग्रामजीके तिलक अक्षत तुलसी श्रीगोकुलजीके करणारविंदपै
 श्रीशालिग्रामजीके समर्पे किवाड फेरें शीतल भोग पास धरके
 शृंगार वृद्धो करें श्रीकंठमें वधना रहें कुलह पर ताइल हीरा-
 को ना मोतीको करवडी उवाय लेंड झारी श्रीगोकुलजीकी फेर
 के भरे समर्पे बहव होइ तासुं शीतल भोग पास रह्यो आवे
 दही भातको डकरा सधानेको कयेरी चोरयो सतुवा हांसी दूध
 की मीये शाक खडबूजाको पना चालनी सब तरतकी सेंघो
 लोण मिरच दूरा मगको डकरा फलारको सब शाक रायता भु-
 जेना सब आवे फलारको

भोगसरे आचमन मुखवरत्रयीडा २ श्रीशालिग्रामजीके खंको पध-
 रावे श्रीगोकुलजीकी माला बढी करके जोड पहरावे सब स्वस्ति
 माला पहरावे रायन आरती होइ जोड बढो होइ पोटें अना-
 सरको साज नित्यवत् राख्यानके नीचे सांसकुं नित्य छिडकाव

॥ वैशाख सुद १५ ॥

पूनमकु शृंगार चोदसको श्रीकंठमें हांस त्रिवलके ठिकाने वधना
 छोटी मोतीकी लडके धरे नृसिंहजी पीछे छंटे दिना पांचमे दिना
 अभ्यंग होइ दीतवार मंगलवार द्वादसी मावस टालके होय पहले
 अभ्यंगकुं शिवरन भात दहीभात ओससकुं दूसरे अभ्यंगकुं दही-

भात आरोगें नृसिंहजी पाछें रथयात्रासुं पहले अम्बंगकुं शिसर-
भात दही भात ओसरसुं आरोगें पहले अम्बंगकुं तथा देखे अम्ब-
गकुं मिरा रत भात आरोगें देखे अम्बंग रथयात्रासुं पहले अम्बंग
नृसिंहजी पीछें रथयात्रा पहले कदीक टिकाने दोइ विरियां अड-
कंगा दोइ विरियां छूछ एक विरियां पन्नाडकी एक विरियां बूंदी-
की रायनमे धोना दार भरसा चार विरियां आरोगें

(Pushtimargiya Research Portal)
रायनमे एक विरियां गुलाबको सौर रोये एक विरियां केरीको
विलसासु रोये एक विरियां खडबूजाको मीचे साक रोये एक वि-
रियां आंवको विलसासु रोये एक विरियां आंवरोस रोये ये सब
नियमसुं आवे मनोरथसुं मंगलभोगमें लुचई आंवरोस कोई दिन
आंवको विलसासु लुचई कोई दिन केरीको विलसासु लुचई
खडबूजाको विलसासु लुचई गुलाबको सौर लुचई शिखरण-
लुचई कोई दिन केसरी शिखरन लुचई

खडबूजा जवसुं आवें तवसुं गोपीबल्लभमें राजभोगमें पणख-
बूजको आरोगें अधकी चले जवे छोटी डवरीया मंगलभोगमें गोपी-
बल्लभमें राजभोगमें सध्यामें रायनमें नित्य आरोगें एक दोइ
विरियां सांझ सवेरें अनोसरमें थारीमें खडबूजा एक क्येरी बुरा-
की एक मिश्रीकी ऐसे ही आंवरोस राजभोगमें गोपीबल्लभमें आरोगें
ऐसे ही आंवको डवरीया बुरा नहीं कोई दिन मनोरथ फूलके
पलनाको होय ता दिन तिहारीमें पलना झुले पलनाके पास भोग
आवे दहीकी सेवके लडुवाको धार गोपालबल्लभ वरावर में दही
पूरी मीचे शाक वा विलसासु ४ तरहेके फीके फडफडीया चनादार
चालनी सब तरहकी कदली फलादिक लोन मिरच बुरा साखन मि-
श्रीकी क्येरी खोवाकी गोली दूधकी हंडी नित्यको भोग बीडा मा-
ला सब स्वरूप पहरे दरीन खले शारी एक पास रहें
पलना झुले पलना गावे थारीकी आरती रूपके दीवलाकी नौछाव
होइ गई लोन उतारें

राजभोगकी शारी भरे राजभोग धरे पलनाको भोग राजभोग
आवे पलनाके दरीन बहुत विरियां ताई होय तो पलनाको भोग

भोग सरे देग होय तो राज भोगमें आवे.

॥ ज्येष्ठ वद २ ॥

कुं चार सारूपको उत्सव अरगजी वरम श्रीमस्तकपै पेंव चं-
द्रिका कतरा सारा जोडी मोतीकी फोदना बडे सौरा मोतीके आभ-
रण मिलमा श्रीनृसिंह जी वत् वचनखा नही धरे दुगदुगी धरे
बहुत गरमी होय तो मच्छकी शृंगार होय आरती थारीकी गो-
पीवल्लभमें भातकी और छडीयल दार पकोडीकी कढ़ी मीये शाक
पापड २ राजभोगमें ४ पापड गोपाल वल्लभमें मनोहरके लड्डुका
हांडी मल्ला आधो पारिया मीये शाक वडाकी छाछके डकरा
ज्येष्ठ वदीमें जल भरे ता दिन वरम श्वेत बाहरको पेंव एककीजो-
डी श्रीमस्तकपै खंडला धरे गोपीवल्लभमें राजभोगमें खंडराको सब
प्रकार होइ आश्विन सुद २ कुं होइ ता प्रकार गोपालवल्लभ नहीं
लुचई नित्यकी अरोगे जल अने सरमें भरे जलमें कमल कमल
के पतुवा खिलेना डार राखे उत्थापन के समयमें ग्वाल तांडी
तिवारीमें सांवाके मिठासजोई दिखाने ज्येष्ठ वद २ वद २ चोरीपे दिख-
जे राशन भोगमें भरता धोवा दार आरोगे.

॥ ज्येष्ठ वद ३ ॥

कुं वट सावित्री पूजते होइ तो सुहारी राजभोगमें आरोगे श्वेत तथा
पीरी

॥ ज्येष्ठ सुद १० ॥

के दिन द्वाहरा वरम अरगजी बाहरकी खिडकीकी पाग लूमकी
कलंगी जोडी होराकी एक टिकडकी शृंगार श्री गिरि धारीजीके उत्सव
वत् छडीयलदार पकोडीकी कढ़ी

गोपालवल्लभकी आरमें अठारह अठारह नग धरे मगडी खानडी
सुहाली २ तरहकी थारके पास खेनकी कवेरी एक डवरीया सौराकी
मिथ्रीको पना.

राजभोग आवेवेमें सांगा मानीपै श्रीजसुनाजीको शृंगार होइ अरग
जी सन्दी चोली लहेंगा नहीं फोदनी मोतीकी २ हार ४ माछा गुंजा पू-

लकी माला कमल पास चौखण पे पंखा श्रीजमुनाजलकी झारी करवई
आरसी अरगजाकी वरनी गुलाबजलकी सीसी सिंदूरकी वंगी वीको को पु-
जेका.

पडगी पे दही भात चारण सनुवा अनसरखडीके चोरी में जेते थार ड-
रीया ओने चोते ही नाम प्रीके था डरीया श्रीजमुनाजीक भोग आवें अं-
रस मिश्रीको पना आंकी वरपी सीरा खडवुजा कदली फलारिख लेन
मिरच कण

पलनामें सु श्री गुरुजी भोगमंदिरमें पधार श्रीगुरुजीके श्रीजमुना-
जीक दंडवत करें आरसी दिखवें दही भात सनुवा भोग धरे श्रीगुरुजी-
की थार साने श्रीजमुनाजीकी मांग सेंदूरसु वहुवेदी भरे चरणस्पर्श करें
अनसरखडीको भोग धरें.

समय होय भोग सरे पहले श्रीजमुनाजीक आचमन मुखवस्त्र बीज दोड़
धरे श्रीगुरुजी कीडी आरगे चुके श्रीजमुनाजीक आरसी सिखाइके थूं-
गार छावमें कडो करवें शय्या मंदिरमें चौखण पे धरे साडी चोली
माला बीज आरसी वरनी सीसी पंखा झारी करवई प्रसारीमें निकसें
नित्यकी वरनी अरगजाकी सिंहासन पे जल भरे शयनमें धोवादार भ-
रता आरगे सांझके निजमंदिरमें विराजे शयन समय चोकेमें अरगजी
पिछवाई सिंहासन.

२८११ भाग ॥ ज्येष्ठ सुद १५ ॥

पुनमकुं स्नान यात्रा होइ तो चौखणकुं सवेरकुं जल लावे सांझकुं अधि-
वासन होय एकमकुं स्नान यात्रा होइ तो पूरनमासीकुं अधिवासन होइ
पलना मंदिरमें शयनभोग आवे पीछे सुकौ हरदीको चौक पूरे हांडा फडा
धरे हांडामें कडछा रहै घडामें चमचा रहै कंकू हांडा घडोके चारों
ओर तर्पेटे छना माड जल पधरावें. एक लोय श्रीजमुनाजलको एक
लोय गुलाबजलको पधरावें छना सरकाइके तुलसी पधरावें पुष्पन-
की कली पधरावें वमेलीकी शयवेलीकी मोगराकी पीतकी जुहीकी मोति-
यादी पिसी केरार पधरावें ता मोछे अधिवासन होइ प्राणायाम करवें
सकल्प ॐ विष्णुरि ३ त्यादि उत्तरायणे ग्रीष्म ऋतौ चतुर्दश्यां शुभकारे
शुभनक्षत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टां शुभतिथौ

भगवतः श्रीगुरुभक्तमस्य ज्येष्ठाभिषेकं कर्तुं तदङ्गत्वेन जलाधिवासन-
महं करिष्ये : कंकू अक्षत गङ्गीकी कवरी भोग धरें तुलसी समर्पे
शंखोदक धूप दीप चार वातीकी आरती दूसरे आवें भोग सरे

स्नान थाती वृं आये हरिणों सतुवावे लडुकाको बडो भोग आयेगे
सुजनी पंखा चौकनो बंटा पलटें निजमंदिरके द्वारसुं पादलगमा रहे
पादके आगे सुकी हरदीको अछदल मांडके परात पधरावे स्नानके
पडापे कंकूको अछदल मांडके श्वेत चौकनो वस्त्र केसरकी कोरको
चोपडता विछावे हाडि चडा शय्या मंदिरकी ओर धरे भोग सरे
आचमन मुखवरन वीज २ धरें दरसन खुलें मंगला आरती होख टे-
रा खेंचें तिलक लड ओटनी पाग वा टोपी कडे करके स्नानके
वकल पे पधरावे टेरा खोलें दंडवत करें झालर घंटा शंखनाद
होंय कीर्तन होंय तिलक करें अक्षत चोटें चरणारविंदमें तुलसी
समर्पे शंखमें समर्पे प्राणायाम करके संकल्प करें

ॐ विष्णु ३ रित्यादि उत्तरायणे ग्रीष्म ऋतौ ज्येष्ठमासे शुक्ल-
पक्षे ज्येष्ठा शुभनक्षत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुण विशेषेण वि-
शिष्टायां शुभतिथौ भगवतः श्रीगुरुभक्तमस्य ज्येष्ठाभिषेक स्नान-
महं करिष्ये

यह पढ जल अक्षत हातमें ते खेडने फिर शंखसुं स्नान करावें
झालर घंटा शंखनाद कीर्तन बंद होइ ज्येष्ठाभिषेक वेदको पाठ हो-
इ स्नान होइ चुकें टेरा खेंचें अंगवस्त्र होइ वस्त्र केसरकी को-
र वारे बीचमें केसरकी वूटीके कुलह जोडी आभरण अक्षत तृती-
या वत् तीन चंद्रिकाको जोड डोल तिवारीमें छेदे टाकुरजीके
श्री शालिग्रामजीके तिलक अक्षत तुलसी समर्पके ज्येष्ठाभिषेक
होइ झालर घंटा शंखनाद नहीं श्री महा प्रभुजी के स्नान होइ जल-
मेंसुं तुलसी निकास लेनी तापीछें स्नान अंगवस्त्र सोधो समर्पे
ओटनी ओट पलनाको भोग उत्सववत्

गोपीवल्लभमें आये माटिया मीने शुद्ध छडीवल दार पकोडीकी

कढ़ी उत्सवको संधाना. राज भोगमें छहीयल दार पकोछीकी कमी
मीवे शाक पापड चोरयो सतुवा दही भात मीवे शाक कजीके शाक
अनसरवहीने हांडी मलडा दूधके गोपोल वल्लभमे वूदीके लडुवा
उत्सवको संधाना उत्सवको भोग राजभोगमें आवे वीमके लडुवा
चिरोजीके लडुवा मिश्रीके पना सांडके पना आंवके दोकरा अंकुरी
को दोकरा तापर खोपराकी जड़ेकी चालनी सब बाहकी गौर दूनी तर
मेवा कदली फल दिक मिरच वूरा दूध घर तो इक हरी आवे सब भो-
ग आव चुके तुलसी शंखेदक धूप दीपे. राज भोग सरें बंदा में ४ वीज
नित्यके २ उत्सवके २ जुमले ४ चौण्ड मोतीकी

परातमें होदमें जल स्नानको बचे सो कर देने सेवरक वरनी नहीं
अभ्यंग नहीं गोपोवल्लभ भोग आवें तवसुं पंखा खिंचे नहीं. राजभो-
गके समे खिंचे उत्थापनमें उत्सववत् खेके मूंग आरोगें आंवकी
क्रस्तु में आंवको सीरा आंवकी वरसी पलनामें १५ दिन तथा महिना
एक तांडी आरोगें.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ अषाढ वरी ३० ॥

श्री गिरि धारीजी महाराजको उत्सव गुलाबी वस्त्र गोह पागल
मकी कलंगी हीराके ताइतकी जोड़ी हमेल कर्णफूल हीराके २ हतफ
ल होइ

अरोगवेको क्रम श्री विठ्ठल रायजीके उत्सववत् राजभोगमें शिखर
भात आंवको विलसत आरोगें.

रथ यात्राके आगले दिन तिवारीमें चंदवा पिछवाई लाल मरवबत्तके
बंधे रथ सिंगारके सिद्ध कर रत्न संध्या आरती पीछे पंचारा
बंद होइ साज धोताके उत्थापनमें वही भातवार के सुजनी क
सीदाके कमलकी

॥ अषाढ सुद २ वा ३ ॥

रथ यात्राके उत्सव आखे दिनमें वूदीके लडुवाको वडो बाहभो-

की सामग्री के दोड़ दोड़ नग बाल भोग की सामग्री के दोड़ दोड़ नग वूही
दूरे गुंडा मण्डी सेवके लडुवा बीजके लडुवा चिरोजीके लडुवा शि-
खरन वडी छोटे बल खेमों वडा की जल की हांडी पेडा दूध पूरी
वासोधी मलाई खेत बरसी बेसरी बरसी मीठे दही छेक्यो दही उ-
सवके सधाना कदली फला दिक लोन मिरन बुरा चालनी सव तर-
हकी आंवके टोकरा अकुरीके टोकरा खोपरी की जल की रथ में लटक-
ही के तकिया।

भोग आय चुके धूप दीप तुलसी शंखोदक धूप दीप होय समय होय
भोग सरे आचमन मुख वस्त्र वीडा २ राज भोग की माला श्री गुरुजी-
की बडी करके रथ में धरे श्री गुरुजी के दोड़ माला पहरोवे क-
मल धरे छोटे श्री गुरुजी के माला पहरोवे दरसन खुले गुसाई
मुखिया भीतरिया मुठा पंखा करें रथ के एक विरिया डोल तिवारी के
द्वार तांडी चलावे पीछे पिरावे किवाड पिरावे मंदिर वस्त्र होय
भोग आवे बाल भोग की सामग्री के बीजके चिरोजीके पहले भोग दूसरो
भोग चौक में आवे छेले भोग डोल तिवारी में आवे नग चार चार आ-
वे और भोग पहले भोग वत् आवे आवे अकुरी दू आरी मरी।

भोग आय चुके धूप दीप तुलसी शंखोदक होइ किवाड फिरें समय
होय भोग सरे आचमन मुख वस्त्र ४ वीडा धरे माला पहरोवे पूर्ववत्
दरसन खुले मुठा पंखा होय एक विरिया चौक में रथ डोल तिवा-
री के द्वार तांडी ले जाय पीछे पिरावे दूसरी विरिया रथ चलावे
सो डोल तिवारी में दक्षिण मुख विराजे टेरा खेचें मंदिर वस्त्र होइ
भोग आवे दूध की हांडी पना मिश्रीको पना खांडको मलाई वासोधी
पेडा दूध पूरी बेसरी बरसी मीठे दही छेक्यो दही।

बीजके लडुवाको टोकरा चिरोजीके लडुवाको टोकरा वूहीके टो-
करा गुंडाके मण्डीके सेवके लडुवाके आंवके अकुरीके कदली
फला दिक उसवके सधाना चालनी सव तरहकी लोन मिरन बुरा
शिखरन वडी वडा की छछकी चपटीया एक चपटीया जल की एक झा-
री श्री जमुना जल की।

भोग आय चुके तुलसी शंखोदक चमचा कयेरी धरे धूप दीप होइ।

उद्ये पाटिया राजभोगमें तीन कूडा छडीयल दार कछकी छाछकी चप-
टीया गोपालवल्लभमें धार दोई एक जलेबी की एक मनोहरके लडुगकी
आये दिनमें बूंदी जलेबी आरोगे

सांझक भोग समय होल तिवारीमें बनातक लाल बगलम विराज
केला पल्लव धरे सध्या भोगमें सध्या भोग आवे अथकीको भोग आवे द-
होई मेरुके लडुवा मेरुकी गो आकको विरसाक कोकी दार तथा मंग
एक पीको चारनी सव तरहकी अंगरस कहली पल्लादिक लोन मिरच
बुरा तुलसी शंखोदक धूप दीप होई समय होई भोग सर आरती
होई सवमें लाल थागकी माला तथा जोड पहरे
रथ यात्रा पीछे हिंडोरा पहरे सुन हरी किनारीके वरज धरे श्वेत
वरजके लाल कोर श्वेत वरज के हरी कोर मणौनके आभरण पहरे
मोतीके पहरे

॥ आषाढ सुद १० ॥

वेगन दसमी आज संसखी अनसखीमें वेगन सव प्रकार आरोगे
एकादशीस वेगन बंद होई

॥ आषाढ सुद १५ ॥

अषाढी पुनमके इक दाली श्वेत चंदरीके वरज पुनमके छटकु ओ-
ढनीके झालर नहीं लगे पुनमके मोतीको मुकुट जोडे मोतीको
शृंगार भारी चोये धरे ओढनी राजभोगमें रही आवे
गोपीवल्लभमें भात छडीयल दार पकोडीकी कटी पापड मेरुकी पूरी
के टिकाने कचौरी छोक्यो दही आरोगे मीमे राक
राजभोगमें हांडी मलडा गोपाल वल्लभमें लालके लडुवा आरोगे मीमे
राक वडाकी छाछके उवरा सांझक चंदडीकी गोले पाग बांधे
सीस फूल बीचमें

॥ आकण वद १ ॥

एकमके खाली दिन होई तो श्वेत धाये वरज सुनहरी चित्रके फेंव
लडकी जोडी आजसु मालाको आधो जोड धरे सो दसहरा ताई

एकमकुं वा दूजकुं हिंडोरा हीराकी गादी पै विराजे अभंग होय
 वस्त्र लाल सुनहरी किनारी के जोड़ी हीराकी श्रीमस्तकपै हरी खिडकीमो
 पाग सादा चंद्रिका पोंदना बडे कर्णफूल ४ शृंगार दुहरो दूसरे उत्सव
 वव हार लै कमल पत्र नही गोपी वल्लभ मे छज यल हार पकोही की क
 दी मोष शाक पामछ.

राज भोग में आधे आदिमा गोपा हव भूषण वूरो के लड्डवा श्रीम-
 हा प्रभुजी दोई दिन ताई गुंजा पहरे आ भरण में पदंगा पोष पिछ
 कई कसूमल चौपड वेग जडोज गेद जोगान सोने के आरसी बडी दे
 रें सींगे शाक कदोसन में सांझकुं हिंडोरा धरें हिंडोराकी अधि-
 वासन करे प्राणायाम करे संकल्प करे संकल्प ॐ विष्णुविष्णु-
 विष्णु रित्यादि दक्षिणायने वर्षा ऋतौ भगवत श्रीपुरुषोत्तमस्य हिं-
 दोलादिरोहणं कर्तुं तदङ्गत्वेन हिंदोलाधिवासनं करिष्ये कंकु
 अक्षत छंटे चंदन डांडीनकुं तथा खंभनकुं लगावें गडी की कलेरी
 भोग धरे तुलसी शंखोदक धूपदीप ४ वाती की आरती उवरा सरे
 गकुरजी छंटे गकुर हिंडोरा में विराजे सादा पहरे श्रीमहाप्रभुजी
 पास विराजे साहज जुलने के भोग धरे शकरपुस्तक सर्व के सधान
 चालनी सब तरह की सींगे शाक दूध की हांडी तर मेवा कदली फ-
 लादिक लेन मिरच बुरा तुलसी शंखोदक धूपदीप होइ टेरा खेचें
 समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र २ बीज और २ बीज अ-
 धिकी धरे दरसन खुले हिंडोरा चार गावें टेरा खेचें शारी सब
 कान्ते शयन की भरे शृंगार बडे करे सोसफूल रहे विना झारकी जो
 ठनी ओढ़ें शयन भोग आरोगे हिंडोरामें बीठा २ संध्या भोग के धरे
 एक शारी पडगी पै धरे नित्य शृंगार बडे भये पीछें सोसफूल
 नित्य रहे.

दूसरे दिना पीरे वस्त्र लाल उत्सव की जोड़ी उत्सव के हार सादा
 कर्णफूल चार कलेरी जुहाई चंदन हार केजनी खिडकी मो पाग सादा
 चंद्रिका श्रीमहाप्रभुजी गुंजा आभरण पहरे श्रीमहाप्रभुजी के पद-
 ग पोसा दोऊ दिना तीसरे दिना वेंजनी वस्त्र हीराकी जोड़ी शृंगार
 इकहरो वेंजनी कुलह आभरण हीराकी करधनी जोड कामे को

शृंगार भारी चोये धरे चोये शृंगारकुं हरे वस्त्र लाल पिंडकीकी
पाग सुनहराकी जोड़ी कर्णफूल ४ शृंगार भारी फोंदना बडे धरे
॥ श्रावण वद १८ ॥

कुं श्री गन्माष्टमीकी कथाई बडे कुलहर धरे नाच नर्तिसीको
सादा जोड वस्त्र करारी वा कसमल जोडी लाल पागकी शृंगार
भारी

॥ श्रावण वद १९ ॥

कुं श्री गोवर्धनजी महाराजको उत्सव गुले नार किनारीके वुलीके
वस्त्र डकको मुकुट हीराकी जोडी शृंगार भारी दुहरो वा इकहरो
अरोगवेके क्रम श्री विठ्ठलरायजीके उत्सववत् सांझ कुं गोल पाग

॥ श्रावण वद २० ॥

मावसकुं हांडी काचकी सांझकुं बंधे काचकी हिंडोरा वस्त्र श्याम
किनारीके लहरीयाके वा धारीके हीराकी जोडी हीराको मुकुट
शृंगार भारी चोये धरे शृंगार वनकी इकहरो सांझकुं
हिंडोरा झूलके शृंगार बडे नहीं होय शयन भोग आरोगे छडि
बलदार भोग सरे हिंडोरामे फेर विराजे आचमन मुखवस्त्र शयन
के बीडा हिंडोराके बीडा करनी अरगजाकी धरे सब स्वरूप माला
पहरे झारी सांव स्वरूपनकी भरे भोग आवे दहीके सेवेके लडुवा
उत्सवको सधाना दूधकी हांडी तर मेवा केला फलादिक होन मिख
बुरा मैदाकी पूरी आँकेको विलसाख कचौरी खेक्या दही गुंझिया
दारकी खेकी दार वा मूंग फड फडीया चणाकी दार आज शयनमें
हिंडोरा झूलें तुलसी संखोदक धूप दीप टेरा खेचें समय होय भोग
सरे आचमन मुखवस्त्र बीडा होय धरे दरसन खुले हिंडोरा झूलें
आरती थारीको होय नोछावर होय टेरा खेचें शृंगार बडे होय
श्याम गोल पाग बंधे सीसफूल रहे मालाको जोड पहरे शयन
आरती होय वा न होय जोड बडे होइ श्री गुरुजी पौढे झारी वंग
माला बीडा नित्यवत् नित्य फिरते शृंगार सब तरहके होय पागके

शृंगार रंगकी खिडकीकी जरीकी खिडकीकी

आज के ही दिन पाजये
चोटी धरे ॥ श्रावण सुद ३ ॥

श्री गुरुजी तीज कसना आवा पहल पोष उत्सवके श्री गुरुजी
के श्री महा प्रभुजीके श्री महा अभुजी आभरण पहरे अभंग
नहीं श्री गुरुजीके अभंग हों वरम चौकी चंदरीके छज्जेदार
पाग हीराकी जोड़ी कर्णफूल ६ शृंगार उत्सववत भारी दोहरो हो
इ चंद्रिका सादा पिछवाई चंदरीकी तीजक कसना आवा पहल पो
लंग पोष उत्सवके रायन समय हिंडोरामें सुले शृंगार रहनेको क्रम
राखीक लिरवा है सांझके अनेसरमें मिगईकी थार बीछ ४
गोपी वल्लभमें छडियलदार पकोड़ीकी कढी मीचे शाक पापड
राज भोगमें आधो पाटिया मीचे शाक हांड़ी मलज दूधके गो
पाल वल्लभमें चिरोजीके लडुका

॥ श्रावण सुद ५ ॥

नाग पंचमीके कोयलके रंगके वरम सुनहराकी जोड़ी सुनहरी
जरीकी खिडकीकी पाग सादा चंद्रिका मध्यके फादना ४ कर्णफूल
सोनेको नाग धरे

गोपी वल्लभमें भात छडियल दार पकोड़ीकी कढी पापड मीचे शाक
राज भोगमें आधो पाटिया मीचे शाक चोरी ध के फरा मुटिया वूराकी
कयेरी घृतकी कयेरी पापड
गोपाल वल्लभमें सेवके लडुका आरोगे सेवकी खीर आरोगे चोख
की खीर नहीं

॥ श्रावण सुद ८ वा १ ॥

जा दिन श्रेष्ठ चंद्रिका श्री गुरुजी के होय ता दिन वगौचामें श्री
गुरुजी हिंडोरा सुले वरम लाल रंगहरा बिनारोके हरिबाके
जोड़ी हीराकी मुकुट हीराकी भारी इकहरो आभरण उत्स
वके नित्यके मिलमा छडियल दार पकोड़ीकी कढी आधो पाटिया
गोपाल वल्लभमें मनोहरके लडुका पापड

सांझ कुं ग्वाल भये पीछे उकरा धरके हिंजोराको अधिवासन करें।
 पूर्ववत् उकरा सरे झालर चंय शंखनाद होइ जलकी झारी संग
 चले श्रीमहाप्रभुजी छेदे दाकरजी हिंजोरा में विराजे श्रीमहाप्रभुजी
 पास विराजे माला सब स्वरूप पहरे भोग आवे चंद्रकला माखन
 बड़ा हांडी दूधकी मलाई पंजा वासी दो दूध पूरी करारी या करकी
 मीये दही छेकी दही शिखरन बड़ा कोडवरा खीरकी उकरा व-
 डाकी छेकी उकरा उभारना सधाना करही फलदा लेन मि-
 रच वूरा चालनी सब तरहकी कचौरी सेव गुंझिया दारकी छेकी
 दार फड़ फड़ीया चना तथा दार

तुलसी शंखोदक धूप दीप समय होइ भोग सरे आचमन मुख-
 वस्त्र बीजा २५ धरें दरसन खुलें हिंजोरा झुलें आरती थारीकी
 होय नोछावर उपरना रूपैया ^(१) होय पधारके मंदिरमें हिंजोरा
 झुलें भांगली माला बड़ी होइ दूसरी माला पहरे दरसन खुलें
 हिंजोरा झुलें राई लेन होय बिबाड फिरे झारी भरे शृंगार
 बडो करें गोल पग बांधें सैंस पाल रहै रायन भोग आरोगे छ-
 जीबल दार रायनमें होय।

॥ श्रावण सुद ११ ॥

पवित्रा एकादशी कुं अभ्यंग होइ वस्त्र कुलह अक्षय तृतीया जैसे
 जोड़ी लाल नित्यकी तीन चंद्रिकाको सादा जोड़ पैंदना बडे धरें
 भादीये शृंगार मध्य ताई उत्सवको बडु भी हार धरें कही आरती
 देखें

गोपी बल्लभमें आखो पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना
 राजभोगमें तीन कूडा छडि थल दार मीये शाक पाण्ड कचरीयाकी
 थारी तिलवडी देवरी बड़ीके २ साक

गोपाल बल्लभमें मना हरके लडुवा उत्सवको सधाना खीर दूनी
 बडाकी छछकी चपटिया फलारकी सब आवे

पवित्रा अवेर कुं धरें तो पलना झुलें सिंहासन पे विराजे सिंहा-

सनको साज सब मंडै षट-चोकी नहीं सांझकूं पहरें तो उत्थापन भोग सरे पवित्रा राखी को आधिवासन भेले होइ प्राणायाम करके संकल ॐ विष्णु ३ रित्थादि दाक्षिणायने वर्षा ऋतु तो श्रावण मासे शुक्ल पक्षे एकादश्या शुभ नक्षत्र शुभ योग शुभ करण एवं गुणविशेषण वि-
शिष्टाया भगवतः श्री गुरुदेव नमस्त्य पवित्रा रोहण रक्षान्धन कर्तुं तदङ्ग देवन उभयराशि वासन करिष्ये संकल अक्षय गङ्गी भोग धरे तुलसी शंखोदक धूप दीप १६ वासी की आरसी दरसन खुले की तैनियां आवे दंडवत करके झालर घंटा शंखनाद कर पवित्रा पह-
रावे तुलसी चरणारविन्दमें समर्पे छोटें गुरजी कूं श्रीमहालिङ्ग मजी कूं श्रीमहा प्रभुजी कूं पवित्रा पहरावे के रूपैया नारियल भेंट धरे दश खेचें भोग आवे शकरपारा उत्सवको संधाना मि-
श्रीकी डेली दूधकी हांडी चालनी सब तरहकी सेवेर कूं पवित्रा पहरें तो झारो १ भरके श्रीगुरजी के पास धरके आधिवासन करें सांझकूं पवित्रा पहरें तो दरसन होइ चुके झारो भरके भोग धरे संध्या भोग उत्सव भोग भेले आवे तुलसी शंखोदक धूप दीप भोग सरे वीज अथवा आवे सेवेर कूं भोग न्यारो आवे उत्सवको भोग सरे राजभोग आवे पिछवाई सुनहरी वसमाकी

॥ श्रावण सुद १२ ॥

झादरी कूं जागते श्रीमहा प्रभुजी पवित्रा पहरें ओढनी ओढे गुलगवी वस्त्र पंजाकी जोड़ी पंजाको एक नंगो मुकुट फोदना बडे धरे गारी पे शृंगार मध्य तांई पिछवाई चित्रकी शृंगार करचुके सुनहरी रुपहरी श्वेत फूल माला पहरावे ओढनी उद्योप ओढनी पे छोटी फूल माला गुजराती पावेत्रा वडी फूल माला लट पवित्रा फूलका माला पहरावे आरसी दिखोवे ओढनी ऊपर के पवित्रा माला बडे कर लड़ गोपीवहू भ आतागे छडियल दार प्रकोडी की कडी पहनावू लें साजभोगमें सेवके लडुकाको गोपाल वल्लभ आरोगे राजभोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीज आरोगे सिंहासन पर पधारें ओढनी ऊपरके पवित्रा पहरावे माला फूल

को पहरावे दरसन खुलें आरसी दिखावे गेंद नौगान वेन पाट नौकी
 लगावे त्रिधौ आरती होय आरसी देखे माला बजो करे लट पवित्रा
 बजो करे वाम ओर तकि या पै धरे दूसरे पवित्रा रहे आवें उत्था-
 न भोग सरे फूलको माला पहरे लट पवित्रा पहरे संस्था आरती
 पीछे माला लट पवित्रा ओढ़नीके ऊपरके पवित्रा बजो करे गाल
 आरोगे उबरा सरे हिंडोराम विराजे ओढ़नी ऊपरके पवित्रा लट
 पवित्रा फूलकी माला पहरे हिंडोरा बुल चुके शृंगार बजो होइ
 गोल पाग बांधे सोस फूल रहे या प्रको तरासी तांडे पवित्रा पहरे
 एकादशीकं तथा द्वादशीकं दोऊ दिन गुसाई बहुवेयी मुखीया भी-
 तरिया पवित्रा धरावे एकादशी द्वादशीकं गुसाई बालक तथा
 बहुवेयी पवित्रा न पहराइ सके तो तेरस तथा चौदस तथा पून-
 मकं धरावे पवित्रा एकादशीसुं राखी तांडे सिंहासनपै हिंडोरकी
 झालर पै पवित्रा रहे पवित्रा एकादशीसुं भादो वद १२ तांडे
 श्याम वस्त्र तहीं धरे तेरसकं चतुरा नागा वस्त्र लहरियाके शृंगार
 यथा रुचि राजभोगमें गोपाल वल्लु भकी थार सीराकी कंकोडा आ-
 रोगे

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ श्रावण सुद १६ ॥

कुं रायजीको उत्सव पीरे वस्त्र कुलह धरे कडे फोदना शृंगार
 गादीपै मध्य तांडे कामको जोड अरोगवेको अम श्री विठ्ठल रायजीके
 उत्सववत् गादी तकि याकी पाट नौकीकी लकी गादीकी चेत खोली
 उतरे गादी वस्त्र बजो होइ पिछवाई चंदुवा घट बंदीके गेंद नौगान
 सोनाके वेन जडाऊ शतरज सोनाकी पट पीरो

॥ श्रावण सुद १५ ॥

रक्षाबंधन - तथा श्री लमोदरजीको उत्सव अख्यग होय गुलेनार
 वस्त्र छड्डेदार पाग चंद्रिका सादा हीराकी जोडी शृंगार गादीपै
 दोहरो उत्सववत् सुनहरी रुपहरी पवित्रा पहरे जितनी जग
 राखनी कर्णफूल ४ साज तकि या घट बंदीके गेंद नौगान सोनेके
 वेन चौपड जडाऊ पलंगपोष कसना झावा उत्सवके सुजनीप्र-

विनिष्क उत्सवकी सवेरकूं वा सोझकूं राखी बांधवेको समय पवित्रा
 वत् अवेरो मुहूर्त होय तो हिंडोरामें राखी बांधे पास मिगईके टुक
 छंनसुं बांधके धरें दरसन खुलें दंडवत करें झालर घंघराखे
 तार होय तिलक मारें अक्षत चोदें राखी दोऊ श्रीवत्समें बांधे
 बीज २ धरें नगराविदमें तुलसी समर्पे छोदें श्रीवत्सजीकूं
 श्री शालिग्रामजीकूं श्री महाप्रभुजीकूं तिलक अक्षत राखी.
 हिंडोरा कावको तीजकूं राखीकूं शृंगार वड भये पीछे पागपै
 छोरि सिरपच छोरि कलगी होराको लड वसर करण फूल २ हत
 फूल २ झोरा श्रीकंठमें लड त्रिवल दुगदुगीको माला धरें शयन
 भोग अरोगके हिंडोरा झुलें. हिंडोरामें शयन आरती होइ अनो
 सरमें मिगईकी थार ४ बीज ३ कूं तथा राखीकूं दोऊ दिन
 सदसी तांडे.

श्रीजन्माष्टमी महोत्सवके शृंगार भादों वद ५ सुं होइ

॥ भाद्रपद वद ५ ॥

कूं एक वंद पीरी चूड़डी के वरन छज्जेदार पाग हरी जोड़ी रणी
 फूल २ दोऊ श्रीहस्तनमें एक एक फूल वेषु हरी लूमकी कलगी
 सुनहरी शृंगार हलको शृंगारी आप गोपालबद्धभमें मनोहरके
 लडुवा पिछवाई सिंहासन चंदुवा तक्रिया पाट चौकी सब यटवंदीके

॥ भाद्रपद वद ६ ॥

कूं हरे श्वेत लहरीयाके वरन छज्जेदार पाग लाल जोड़ी कर्णफूल
 २ श्रीमस्तकके श्रीहस्तनमें एक एक फूल गादीपै लालमाल २
 अक्षकी पंचमीसुं वेषु लाल जमावकी कलगी लाल शृंगार पंच
 मीसुं कुछ भारी फोदना नहीं शृंगारी आप गोपालबद्धभमें
 मेवाये आरोगे नगराविना पवित्रा एकादशीसुं.

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ भाद्रपद वद ७ ॥

कूं कसूमल जेरिकाके वरन छज्जेदार पाग हीराकी जोड़ी फोदना
 मध्यके धरें श्रीकंठमें कंवी दुगदुगी बही धरें फोदनाकी गादीकी

माछा मोतीनकी गादी पै हार होराके २ चंद्रहार सोनेको गुंजा वेणु
 श्वेत मीनाकी एक श्रीहस्तमें रत्न चौक होराको धरे हव सांकला
 मुद्रिका नहीं शृंगार मध्य तांई सादा चंद्रिका धरे शृंगारी आप
 गोपाल बहु भमें केशरीया चेवर आरोगें शयन भोगमें छरीको
 भोग आवे सीरा मुरब्बाकी केशरी मैदाकी पूरी खाना सोचकी क
 येरी होनकी बचरी जवकीने साकर भुजन

सप्तमीसुं दसमी तांई जडाऊत विधा गुंजा आवे खोरा श्रीश्री
 प्राचीन गादी होपकी चौपड़ गेंद चौगान सोनाके पंख पोरा कस
 ना झावा सुजनी उत्सवके श्रीमहा प्रभुजी सुधरा सोनेको वासन
 वंदन वार टेरा उत्सवके सप्तमीकुं करवा करवडी मृतकाके तथा
 अरगजाकी वरनी आव खोरा हीराको सीसी गुलाबजलकी कुंछाव
 टा जडाऊ

श्रावण सुद १२ पवित्रासुं भारों वद ११ तांई हरे श्याम वस्त्र नहीं
 धरे उत्थापनमें सिक्खे नाज नहीं आरोगें अष्टमीके दिनसुं सांकड
 उतरे शयनको करवा करवडी अरगजाकी वरनी न होय श्रावण
 सुद १४ के दिनसुं तक्रियांनकी लंबी गादी पाट चौकीकी श्वेत खोली
 उतर जाय गादी वस्त्र नहीं पुनमकुं पड़गकुं तक्रिया पाट चौकी
 टाट बंदीके कामके दूज तथा तीज तथा चौथकुं तक्रिया लंबी
 गादी पाट चौकी नित्यके श्वेत खोली नहीं रहे पंचमी तथा छठकुं
 टाट बंदीके सप्तमीकुं अष्टमीकुं नौमीकुं दसमीकुं जडाऊत क्रिया
 एकादशीकुं तक्रिया लंबी गादी पाट चौकीकी श्वेत खोली जन्मा
 ष्टमीके वंदाकी चंटे गादी प्राचीन गादी वस्त्र न विछे श्रावणसुद
 १४ के दिनसुं टाट बंदीके चंद्रवा बंधें उत्सवके टेरा पंखा वंदन
 वार वामनद्वादशी तांई रहें तथा श्रावण सुद १४ के दिन नये सिं
 धासन पिछवाई बंधें शुभम् ॥

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

॥ ग्रहणसमयको संकल्प ॥

ॐ विष्णु विष्णो रित्यादि यथानाम्नि संवत्सरं यथायने यथा-
चतुर्थां अनुक्रमसे अनुक्रमसे अनुक्रमसे अनुक्रमसे अनुक्रमसे
यथायने अनुक्रमसे अनुक्रमसे अनुक्रमसे अनुक्रमसे अनुक्रमसे श्रीनन्द
रायजी कुमारस्या भगवत्पार्थ यथा रात्रि इह संवत्सरा रौष्यं यस्मै
कस्मै ब्राम्हणाय शतं मुत्सजे

ग्रहण के दिना वडो बालभोग मगद को होइ गोपाल वद्ध भमे आ-
रोगें अक्षय तृतीया पीछे सतुवाको वडो बालभोग गोपाल वद्ध
भमे आरोगें ग्रस्तास्त होय ता दिन सरपडी नहीं अरोगें अनस-
खडी में भात के टिकाने सीरा घृत के टिकाने दुरा रोगी के टिकाने
पुरी लीय भुज मा लोन नहीं औरें दूध घर बालभोग सब आरोग-
में

चंद्रोदय भवे पाछे जल आवे तब रातो इ होइ शयन भोग
राज भोग गोपीवल्लभ भेलो आरोगे लोन सघानाको क्येरी
२ दही शिखरजी दुध चरकी मय पुरी प्राक भजेना अनसख
डी सखडी सब होइ छीनी रोये ग्रहण समय शृंगार मंगलको
सो रहै उष्ण कालके दिनमें पिछली रात्रिको ग्रहण होय तो
मंगल भोग मोक्ष भये पीछे स्नान होइ श्रीयकुरजीकुं तिलक
लड धरावे दोपी वा पाग ओढनी उवावे झारो भरें सब स्वरूप
नकी छोटे श्रीयकुरजीकुं श्रीशालिग्रामजीकुं श्रीमहाप्रभुजीकुं
स्नान होइ दुध चरकी सामग्री भोग धरें मंगल भोग धरें भो-
गं सरें आरती होइ शृंगार होइ शृंगार भोग गोपीवल्लभ आ-
वें नित्यवत् सब भोगको क्रम नित्यवत् शीतकालमें पिछली
रात्रिको ग्रहण होय तो मंगल भोग पहले अरोग लेंइ
ग्रहणके दिन ४ घडी पहले सखडी भोग आरोगे
सूर्यग्रहण ग्रस्तास्त होइ तो शयन भोगमें सोरा पूडी आरोगे
दूसरे दिन गोपीवल्लभ शयन भोग भेलो आरोगे

अक्षय तृतीया पीछे जन्माष्टमी पहले ग्रहण ग्रस्तास्त होव तो
 दार भोजी उत्थापनमें आरोग्यकी श्रीजमुना जलमें भिजोष राख-
 नी चंदोदय होइ तब दार निकासके भोग धरनी श्रीजमुना जल-
 कूं तुरसी क्षयारेमें पधराव देनो।
www.vallabhacharya-agrahar.org

॥ अथ कीर्तनविधि लिख्यते ॥ भारो वद श्रीजन्माष्टमी ॥
www.vallabhacharyakrupa.org
 श्रीमहाप्रभुजी आगे पीछे वधाई गावनी।
 (Pushtimargiya Research Portal)

राग देवगंधार

आज वन कोऊ हो जि न जाय नेन भर देखो नंदकु-
 मार. आज अति बढ्यो है अनुराग.

पंचासृत समे
 धनाश्री.

रानीजू आपुन मिलि मंगल गावे (शृंगार होती समय) अ-
 भंग आपुन मिलि मंगल गावो माई जावो हो सुतनीसे जसो
 हा रानी तेरो रानी विरजीयो गोपाल. फुली फुलीरी जसो हा
 सुवन फूलन फुली प्रणमयो महारो पुव जव कह बाव सुनी
 नंदनंदन वृंदावनचंद आज नंदजूके द्वारे भीर

(तिलक समे) आज बधाईरो दिन नीरो

(राज भोग आये पीछे) वधाई माई आज वधाई नंद
 वधाई होजे ग्वालन नंद वधाई बांरत गढे तुम जो मना
 वत सोई दिन आयो.

(राज भोग दरसन होती समय) एरी ए आज नंद रायके आ-
 नंद भयो सवे ग्वाल नाचें गोपी गावें आज महा मंगल महारो.
 (भोग संध्या आरतीमें) आज राखते स गोकुलमें अद्भुत वर्षा आई

हो पद्म धरनी जल लप निवारन वंदे धरन गिरिवर भूप मोहन
 नंद राय कुमार. भारोंकी रात अंध्यारी आटे भारोंकी अंधियारी
 अंध्यारी भारोंकी रात गावत गोपी मुधु मृदु बानी. प्यारे हरिको
 विमल जस गावत गोपांगना यह धन धर्म होते पायो सुनिबड